P.G. IV

वेदान्तसार

वेदान्त दर्शन – ब्रह्मसूत्र – बादरायण / व्यास

गौड़पादाचार्य
↓
गोविन्दपादाचार्य
↓
शंकराचार्य

→ 'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है – 'वेद का अंत'

→ वेदान्त दर्शन का आधार – उपनिषद् कहा जाता है।

→ वेदान्त दर्शन के तीन आधार हैं – उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता।

→ वेदान्त दर्शन – ब्रह्मसूत्र पर आधारित है।

→ ब्रह्मसूत्र को ब्रह्मसूत्र कहा जाता है क्योंकि इसमें ब्रह्म सिद्धांत की व्याख्या हुई है।

→ ब्रह्मसूत्र को :– वेदांतसूत्र – लेखक – बादरायण
शारीरिक सूत्र
शारीरिक मीमांसा
उत्तरमीमांसा } भी कहा जाता है।

* वैदिक काल में तीन प्रकार का साहित्य देखने में आता है :–
1 वैदिक मंत्र (वेदत्रय)
2 ब्राह्मण (वैदिक कर्मकांड)
3. उपनिषद् (दार्शनिक विचार)

→ उपनिषद् – उप + नि + षद् – अर्थ – जो ईश्वर के समीप पहुँचाए या जो गुरु के समीप पहुँचाए

→ उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद्गीता को वेदान्त का प्रस्थानत्रयी या आधार कहा जाता है।

→ वेदान्त दर्शन के प्रथम आचार्य – गौड़पाद
वेदान्त दर्शन का चर्मोत्कर्ष – शंकर वेदान्त में

→ शंकराचार्य ने ही ग्यारह मूल उपनिषदों पर भाष्य-रचना की है।

→ गौड़पादाचार्य की – कारिका अद्वैतवेदान्त का प्रथम उपलब्ध ग्रंथ है।

→ कारिका को ही माण्डूक्य-कारिका, गौड़पाद कारिका या आगमशास्त्र भी कहते हैं। इसमें चार प्रकरण हैं – आगम, वैतथ्य, अद्वैत और अलातशान्ति प्रकरण हैं।

* वेद – संहिता – ब्राह्मण – आरण्यक – उपनिषद्

→ वेदत्रयी – तीन वेद

→ स्वामी विद्यानंद विदेह प्रभृति मूलतः एक ही वेद मानते हैं। और चारों वेदों को चार अध्याय मानते हैं।

प्रथम अध्याय – ज्ञानकांड – ऋग्वेद
द्वितीय " कर्मकांड – यजुर्वेद
तृतीय " उपासनाकांड – सामवेद
चौथा " विज्ञानकांड – अथर्ववेद

→ चारों वेदों का सम्बन्ध यज्ञ से है। यज्ञ करने में चार प्रकार की ऋत्विजों की आवश्यकता होती है। —
यथा —

1. ऋग्वेद – होता, ऋग्वेद का ऋत्विज जो ऋचाओं का पाठ कर यज्ञकार्य का निष्पादन करता है।

2. यजुर्वेद – अध्वर्यु – यजुर्वेद का ऋत्विज जो गद्यात्मक मंत्रों का पाठ कर यज्ञ संपन्न करता है।

3 सामवेद – उद्गाता – सामवेद का ऋत्विज जो मंत्रों का पाठ गा के सम्पन्न करता।

4. ~~ब्रह्म~~ अथर्ववेद – ब्रह्मा – अथर्ववेद का ऋत्विज, यज्ञ का अध्यक्ष माना जाता है। उसका कार्य यज्ञ की सभी प्रकार से रक्षा करना है।

* तैत्तिरीय उपनिषद में ब्रह्म को जगत कारण बताया गया है तथा "ब्रह्म" को पंचकोशों द्वारा समझाया गया है:-

1. अन्नमय कोष – स्थूल शरीर अन्न पर आश्रित है। अन्न ही परम सत्य है।
2. प्राणमय कोष – अन्नमय कोष के अन्दर प्राणमय कोष है। यह शरीर को गति प्रदान करता है।
3. मनोमय कोष – प्राणमय कोष के अन्दर मनोमय कोष है। मन ही परम सत्य है।
4. विज्ञानमय कोष – मनोमय कोष के अन्दर विज्ञानमय कोष है। यह बुद्धि पर निर्भर है।
5. आनन्दमय कोष – विज्ञानमय कोष के अन्दर आनन्दमय कोष है। यह आत्मा का सार है। यही ब्रह्म है। यहाँ आत्मा और ज्ञेय का द्वैत समाप्त हो जाता है।

* विशिष्टाद्वैत का आविर्भाव रामानुज के पूर्व एक दार्शनिक विचारधारा के रूप में इसका आरम्भ बोधायन रचित 'ब्रह्मसूत्रवृत्ति' से हुआ था। रामानुज अपने को इसका व्याख्याकार मानते हैं।

विशिष्टाद्वैत — रामानुजाचार्य (श्रीभाष्य- ब्रह्मसूत्र पर भाष्य)

→ शंकर के समान रामानुजाचार्य भी एक टीकाकार थे।

→ शंकर के समान रामानुज भी 'ब्रह्म' को परमसत्य मानते हैं तथा इनके अनुसार भी "ब्रह्म एक है" किन्तु ब्रह्म के तीन अंग हैं

ईश्वर
जड़ जगत
आत्मा } को मानते हैं।

त्रिकूट करण — शंकर के समान विषयों में तीनों गुणों का अधिष्ठान - तत्व -> (त्रिकूट) एवं तत्वों का माया कारण मानते हैं।

→ ये तत्व-त्रय कहते हैं
चित - चेतन भोक्ता जीव
अचित - जड़ भोग्य जगत
ईश्वर - दोनों का अन्तर्यामी

→ चित + अचित - दोनों नित्य और परस्पर स्वतंत्र रूप पर ईश्वर आश्रित

→ दोनों ईश्वर के गुण या धर्म हैं।

→ जो द्रव्य और गुण में संबंध रहता है वही संबंध ईश्वर, चित और अचित में है।

(1) सगुण ब्रह्म

अद्वैत वेदान्त में निर्गुण ब्रह्म की बात की है
विशिष्टाद्वैत में रामानुजाचार्य सगुण ब्रह्म को माना है।
इस संबंध में रामानुज मानते हैं:

(1) ईश्वर और ब्रह्म एक ही है
(2) ब्रह्म या ईश्वर सविशेष सगुण है तथा चिदचिद्-विशिष्ट है।
(3) ईश्वर इस चिद्-चिद् रूप विश्व का अन्तर्यामी आत्मा है
(4) इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति-लय का कारण भी है।
(5) ईश्वर इस जगत का अभिन्न निमित्तोपादन कारण है।
(6) ब्रह्म व्यक्तित्वपूर्ण है — निमित्त + उपादान कारण है।
(7) ब्रह्म कर्म-फल दाता है
(8) ब्रह्म सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है
(9) ब्रह्म स्रष्टा, पालनकर्ता और संहारकर्ता है
(10) रामानुज सत्कार्यवादी है और ब्रह्म परिणामवादी है
(11) विश्व ब्रह्म का रूपान्तरित रूप है
(12) जगत एवं ब्रह्म दोनों सत्य हैं।

* शंकर के ब्रह्म एवं रामानुज के ब्रह्म/ईश्वर में अंतर —

→ दोनों एकवादी (Monist) है अर्थात ब्रह्म एक मात्र सत्ता है पर दोनों में अंतर है —

(1) शंकर का ब्रह्म निर्गुण है जबकि रामानुज का ब्रह्म सगुण —

(2) शंकर का ब्रह्म व्यक्तित्वहीन है जबकि रामानुज का ब्रह्म व्यक्तित्वपूर्ण

(3) शंकर का ब्रह्म सर्वभेद रहित पर रामानुज ब्रह्म में स्वगत भेद मानते हैं।

वेदान्त में तीन भेद माना गया है —

(a) सजातीय भेद - दो गायों के बीच भेद
(b) विजातीय भेद — गाय और बैल के बीच भेद
(c) स्वगत भेद — एक ही गाय में दो अंगो के बीच भेद

(4) शंकर ब्रह्म और ईश्वर में भेद मानते हैं जबकि — ब्रह्म सत् एवं ईश्वर जगत है
रामानुज ब्रह्म और ईश्वर को एक मानते हैं भेद नहीं।

(5) शंकर ईश्वर को विवर्त मानते हैं परन्तु रामानुज ब्रह्म को ईश्वर के रूप में परिणाम/सत्य मानते हैं।

(6) शंकर का ब्रह्म आदर्श (Abstract) है परंतु रामानुज का ब्रह्म यथार्थ (concrete) है

UPSC. (7) शंकर के अनुसार सिर्फ ब्रह्मज्ञान होता है वो स्वतः ब्रह्म हो जाता है जबकि -
रामानुज के अनुसार मोक्ष की अवस्था में व्यक्ति ब्रह्म सादृश्य हो जाता है।

* अपृथक्सिद्धि सम्बन्ध - ब्रह्म-जीव-संबंध के विषय में रामानुज का मत शंकर से भिन्न है। अर्थात रामानुज के अनुसार दोनों के बीच अपृथक्सिद्धि सम्बन्ध है। इसका अर्थ है कि जीव (और जगत भी) ईश्वर के बिना नहीं रह सकते और ईश्वर जीव और जगत के बिना नहीं रह सकते। दोनों में विशेष्य-विशेषण, अंशी-अंश, एवं आत्मा-शरीर जैसा सम्बन्ध है। ब्रह्म विशेष्य है, जीव विशेषण है, ब्रह्म अंशी है और जीव अंश है, ब्रह्म आत्मा है और जीव उसका आत्मिक शरीर है।